जैन समाजात प्रचंड खपाचे व लोकप्रिय मासिक

जैन जागृति

(Since 1969) www.jainjagruti.in

६२ ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, भापकर पेट्रोल पंपा समोर, सिटी प्राईडच्या पुढची लेन, पुणे ४११०३७.
मो. : ८२६२०५६४८०, ☎ : ०२० - २४२१५५८३
मोबाईल : संजय ९८२२०८६९९७, सुनंदा ९४२३५६२९९१
संपादक व प्रकाशक : संजय के. चोरडिया
सहसंपादक : सौ. सुनंदा एस. चोरडिया

❖ संस्थापक ❖
स्व. श्री. कांतीलालजी चोरडिया

❖ वर्ष ५४ वे ❖ अंक ८ वा ❖ एप्रिल २०२३ ❖ वीर संवत २५४९ ❖ विक्रम संवत २०८०

या अंकात	पान नं.		पान नं.
● युवा पिढी के प्रेरणा स्त्रोत : भगवान महावीर	२३	● मनोवेगां को जीतनेवाले विजेता – भगवान महावीर	९६
● वीरत्थुई में भगवान महावीर के ६० विशेषण	२७	● सुक्ति से मुक्ति : उदारता	९७
● अंतिम महागाथा :		● रोग के क्षणों में समाधि कैसे रखें ?	९९
* ५१ : विनय के देवता	४३	● गुरु मंदिर – मंदारागिरी	१०३
* ५२ : धम्मं शरणं पवज्जामि	४५	● अक्षय तृतीया	१०४
* ५३ : शिष्य हो तो गौतम स्वामी जैसा	४८	● रंगबिरंगी : रंग परिवार के	१०७
● शुभ विचार पैदा करो	५१	● जीवन संगीत	११५
● मोक्ष मार्ग के २१ कदम : चोरी न करें	५२	● नि:शुल्क पशु चिकित्सा शिबीर – सादडी	११८
● रक्षा किसकी – मुक्ति कैसे ?	५७	● अकेलापन अखरने न लगे	१२०
● सम्यक दर्शन	६७	● हँसिए और हँसाइएँ	१२१
● रोगी का मनोबल बढाएँ	७२	● दुसऱ्यांशी चांगले वागूनही लोक आपल्याशी वाईट का वागतात ?	१२३
● भगवान महावीर की साधना के रहस्य	७३		
● महावीर के सिध्दांतों को उतारो जीवन में	७५	● भगवान महावीर स्वामी की ३६ विशेषताएँ	१२४
● जैन दर्शन में विश्वशांति के उपाय	७९	● ''जैन धर्म'' तत्त्वज्ञान आणि संस्कृती	१२७
● जिंदगी की जंग	८१	● पूना हॉस्पिटल – वर्धापन दिन	१३९
● व्रतस्थ दानशूर श्री. रमणलालजी लुंकड	९१	● दुगड ग्रुप – रक्तदान शिबीर	१३९
● इनकी नजर में भगवान महावीर	९४	● नामको हॉस्पिटल – नाशिक	१४०

- अरिहंत जागृती मंच – निबंध स्पर्धा १४१
- सन्मति तीर्थ – पुणे १४२
- वाचकांचे मनोगत १४३
- संगीनी नारी संघटना १४४
- मीनाताई मुनोत – सत्कार १४४
- ऋतुराज गौतम निधी लेडिज ग्रुप, पुणे १४५
- राजेश शिंगवी – निवड १४५
- श्री. गौतम नाबरिया – रक्तदान १४५
- पिंपरी–चिंचवड जैन महासंघ १४६
- श्री. सुभाषजी ललवाणी – अध्यक्षपदी १४६
- प्रमिला बोरा, अहमदनगर १४६
- वीतराग सेवा संघ, पुणे १४७
- मिलन म्हेत्रे – पुरस्कार १४७
- श्री. संजयजी कोठारी – जामखेड १४८
- श्री क्षेत्रपाल प्रतिष्ठान, पुणे १४९
- भारत जैन महामंडळ, मुंबई १५०
- श्री नयपद्मसागरजी म.सा. – आचार्यपद १५१
- डायग्नोपिन, न्यु पनवेल – उद्घाटन १५२
- अर्हम् फाऊंडेशन, पुणे १५२
- डॉ. संजय रुणवाल – पुस्तक प्रकाशन १५३
- गुप्ति री साधना कर १५५
- मन – समाधारणा से क्या मिलेगा १५८
- जितो पुणे – १७ वा वर्धापन दिन १६०
- हास्य जागृति १६१
- जयती जैनम् साधना तीर्थ – भिवरी १६३
- चरण स्पर्श से आध्यात्मिक व मानसिक विकास होता है १६४
- धर्मवीर लोकाशाह १६७
- विविध धार्मिक, सामाजिक बातम्या

जैन जागृति मासिकाचे वर्गणी दर ❖ एका वर्षात तीन मोठ्या अंकासहित

पंचवार्षिक	रु. २२००	त्रिवार्षिक	रु. १३५०	वार्षिक	रु. ५००

या अंकाची किंमत ५० रुपये.

- www.jainjagruti.in
- www.facebook.com/jainjagrutimagazine

जैन जागृति वर्गणी व जाहिरात – रोख/Google Pay, M. 9822086997/AT PAR चेक/पुणे चेकने/ RTGS / Jain Jagruti Website इत्यादी द्वारा पाठवावी

BANK ACCOUNT DETAILS - A/C Name : JAIN JAGRUTI

Bank : STATE BANK OF INDIA Branch : Market Yard, Pune 37.

Current A/c No. : 10521020146 IFS Code : SBIN0006117

'जैन जागृति' हे मासिक मालक, मुद्रक व प्रकाशक एस. के. चोरडिया यांनी प्रकाश ऑफसेट, शॉप नं. १२–१३, पर्वती टॉवर्स, पुणे – ४११००९ येथे छापून ६२ बी, ऋतुराज सोसायटी, पुणे–सातारा रोड, पुणे – ४११ ०३७ येथे प्रसिध्द केले. संपादक – एस. के. चोरडिया

"Jain Jagruti" monthly magazine is owned, printed & published by S. K. Chordia, Printed at Prakash Offset, Shop No. 12-13, Parvati Towers, Pune 411009. Published at 62-B, Ruturaj Society, Pune - Satara Road, Pune - 411 037. Editor - S. K. Chordia

टिप : या अंकात प्रसिध्द झालेल्या मताशी संपादक सहमत असतीलच असे नाही. जैन जागृति संबंधित कोणत्याही कायदेशीर कारवाईसाठी पुणे न्यायलय क्षेत्र ग्राह्य धरले जाईल.

टिप : जैन जागृति अंकात प्रकाशित लेख, बातम्या, जाहिरातीचे सर्वाधिकार सुरक्षीत आहेत.

युवापीढ़ी के प्रेरणास्त्रोत : भगवान महावीर

महावीर! चार अक्षर - एक शब्द। लाखों व्यक्तियों का नाम महावीर हो सकता है - हर गाँव में दो चार महावीर मिल सकते है। किन्तु चार अक्षरों वाले इस ''महावीर'' नाम के साथ अढ़ाई हजार वर्षों पूर्व का वह चित्र उभरता है जिसमें राजपाट, सुख-ऐश्वर्य, भोग विलास को त्यागकर तीस वर्ष का राजकुमार मुनि बनता है। महावीर के नाम से ही उनके जीवन की वे सारी स्थितियाँ, घटनाएँ एवं प्रेरक प्रसंग चलचित्र की तरह नयनों के सामने उतरने लगते हैं जिनमें उनकी वीरता, क्षमा, धैर्य, दृढ़ मनोबल, त्याग एवं कैवल्य आदि के अनेकानेक प्रसंग भरे पड़े हैं। महावीर राजमहल के सुख वैभव छोड़कर वनों में मौन, ध्यान, आसन करने वाले महावीर अपने युग के प्रखरतम क्रान्तिकारी थे। उन्होंने आचार एवं विचार दोनों ही पक्षों में महान क्रांति स्वयं के जीवन प्रयोगों द्वारा प्रारम्भ की।

वर्तमान युग की युवा पीढ़ी के लिए महावीर आदर्श हैं। अढ़ाई हजार वर्षों के बाद भी महावीर ने अपने जीवन एवं दर्शन के द्वारा जो मार्ग प्रशस्त किया वह आज उस युग से भी सम्भवतः ज्यादा उपयोगी एवं आवश्यक है। महावीर के जीवन एवं दर्शन का यदि आधुनिक युवा पीढ़ी सम्यक् अध्ययन कर उसे आचरण में उतारे तो ध्वंस की अपेक्षा निर्माण के मार्ग पर लग सकती है। युवा पीढ़ी समाज, राष्ट्र और विश्व की रीढ़ होती है जिसके सबल कंधोंपर पुरानी पीढी देश का दायित्व सौंपकर अपने अनुभवों से मार्गदर्शन करती है। युवापीढ़ी समाज और राष्ट्र की आशा है-विश्वास है। वर्तमान युग के सन्दर्भ में युवा पीढी का अध्ययन करें तो हमें स्पष्ट पता चलता है कि हमारा युवा वर्ग पुरानी पीढी की अपेक्षा अधिक बुद्धिमान है। उसमें बौद्धिक विकास के साथ-साथ तर्क, विज्ञान एवं अन्य योग्यताएँ भी पुरानी पीढी से अधिक हैं। युवा वर्ग के मन में कुछ करने की तड़प हैं, उत्साह है और उसके लिए पूर्ण निष्ठा एवं लगन भी है। हाँ, उसकी इन भावनाओं को जब सही परिप्रेक्ष्य में न समझकर उनके साथ सहयोग एवं अनुदार व्यवहार किया जाता है तो युवावर्ग की शक्ति का विध्वंसक विस्फोट तोड़-फोड़, हड़ताल आदि के रूप में दीखता है।

महावीर स्वयं युवा थे जब उन्होंने गृहत्याग कर संन्यास लिया। महावीर का संन्यास जीवन से पलायन नहीं था क्योंकि उनका जीवन सुखी, समृद्ध एवं वैभवपूर्ण था । महावीर का संन्यास जीवन के उच्चतम मूल्य की प्राप्ति के लिए था वैभव को छोड़कर संघर्ष स्वीकारना, भोगों को ठुकराकर त्याग एवं समर्पण के द्वारा जीवन के उच्चतम मूल्य प्राप्ति के लिए युवा पीढ़ी महावीर से प्रेरणा ले सकती है। अर्थ एवं वैभव की चकाचौंध में पड़कर जीवन को इसी क्षेत्र में होम देने वाले युवक महावीर से प्रेरणा ले तो उन्हें लगेगा कि त्याग करने में प्राप्ति से भी ज्यादा आनन्द आता है। महावीर का जीवन समता क्षमा, धैर्य एवं हृदय की विशालता का उदाहरण है । चण्डकौशिक सर्प दंशन करता है, ग्वाला कानों में कीलें ठोकता है, गोशालक तेजोलेश्या का प्रहार करता है किन्तु महावीर के हृदय में क्रोध नहीं- घृणा और नफरत नहीं । वहाँ तो करुणा का अजस्र स्रोत लहराता रहता है युवापीढ़ी महावीर की इस समता, तितिक्षा एवं क्षमा को अपनाकर देखें तो जीवन की अनेक विसंगतियाँ, बहुत सारे झगड़े और कलह सहज ही समाप्त हो जायेंगे ।

महावीर ने प्रेम का मंत्र दिया - करुणा की वाणी दी । युवा पीढ़ी अपने वासनामूलक सम्बन्धों से ऊपर

उठकर रंगीन चश्में से झाँकना छोड़कर महावीर- प्रेम का आस्वाद लें उस प्रेम में राग और द्वेष दोनों ही नहीं हैं। सबके प्रति एक ही भाव-एक रसता अंतरगता। ऐसी मानसिक स्थिति बन जाने पर भला किसी का कोई शत्रु रह सकता है ? मित्ति मे सव्वभएसु शब्दों से नहीं आचरण से प्रकट हो जायगा। युवापीढ़ी महावीर के जीवन की तपस्या, साधना आदि से प्रेरणा ले और उसका अनुसरण करें तो निस्संदेह नक्शा कुछ और ही नजर आये।

महावीर की क्रान्ति केवल धार्मिक क्षेत्र तक ही नहीं सीमित थी वस्तुतः क्रान्ति की कोई सीमा नहीं होती। महावीर ने विचार और आचार दोनों ही पक्षों में क्रान्ति की क्रान्ति का अर्थ तोड़-फोड़, हिंसा आदि नहीं होता । यह अर्थ तो भ्रान्ति के कारण होता है। क्रान्ति का मतलब है परिवर्तन । रुढिगत परम्पराओं, प्रथाओं और धारणाओं में देश, काल, क्षेत्र के अनुसार परिवर्तन ही क्रान्ति कहलाता है। युवा पीढ़ी आज क्रान्ति की बात करती है किन्तु इसके पूर्व उसे महावीर की क्रान्तिकारी भावनाओं, विचारों एवं कामों को समझना श्रेयस्कर होगा। महावीर की क्रान्ति केवल शाब्दिक अथवा चिन्तन के एकांगी पक्ष की नहीं थी बल्कि उन्होंने अपने विचारों को आचार में पहले उतारा और फिर दुनिया के समक्ष विचार रखे।

महावीर ने धार्मिक क्षेत्र में यज्ञ, बलिदान एवं पाखण्डों पर प्रहार कर आत्मा की सर्वोच्च सत्ता का दिग्दर्शन कराकर अभिनव क्रान्ति की । व्यक्ति स्वातंत्र्य एवं आत्मशक्ति के जागरण का संदेश महावीर ने ही दिया। इसके पूर्व भगवान से मनुष्य अपेक्षा करता था, किन्तु महावीर ने आत्मा की अनन्तशक्ति को पहचानने का मार्ग बताते हुए इन्सान को ही भगवान बताया। कितनी बड़ी क्रांतिकारी बात कही है महावीर ने। मनुष्य की सुसुप्त चेतना, मानसिक गुलामी एवं आत्महीनता की भावना को महावीर ने अपने चिन्तन से दूर किया। युवा पीढ़ी महावीर के इस चिन्तन से प्रेरणा ले सकती है ।

सामाजिक क्षेत्र में महावीर ने जात-पात, छुआ-छुत अमीर-गरीब के भेद को मिटाकर शांति की। उन्होंने वर्ष व्यवस्था पर आधारित वैदिक संस्कृति को नहीं स्वीकारा। जाति से उच्च और नीच नहीं बल्कि व्यक्ति अपने कर्म और आचरण से ही हीन अथवा महान बन सकता है। युवा पीढ़ी आज भी महावीर के इन विचारों से प्रेरणा लेकर देश की जातीयता, छुआ छूत आदि व्याधियों को मिटा सकती है।

महावीर ने नारी जाति को पुरुषों के समान अधिकार दिया - उन्हें पुरुषों से भिन्न नहीं माना । नारी स्वातंत्र्य की बात करने वाली युवापीढ़ी महावीर से प्रेरणा ले सकती है कि उन्होंने अपने शासन में साध्वियों को दीक्षा दी एवं साधना के मार्ग में समानता का मार्ग प्रशस्त किया। साम्यवादी, समाजवादी, वाममार्गी, दक्षिणपंथी आदि अनेक राजनैतिक संगठन आर्थिक समानता को नष्ट करने के लिए अपने विचार रखते हैं। जहाँ लोग सम्पत्ति को बाँटने को कहते है वहाँ महावीर परिग्रह को ही पाप मानकर संग्रह से दूर रहने पर बल देते हैं महावीर के दर्शन में तो स्वामित्व ही नहीं है। जहाँ स्वामित्व ही नहीं है वहाँ कौन किसको देगा और किससे लेगा ? सब अपने आप मालिक होते हैं। आर्थिक क्षेत्र में जिस क्रांतिकारी चिन्तन का सूत्रपात महावीर ने किया है यदि उसे हम समझकर अपना सकें तो विश्व की अनेक समस्याएँ हल हो सकती हैं।

युवा पीढ़ी महावीर के जीवन और दर्शन से बहुत कुछ प्रेरणा ले सकती है। महावीर का दर्शन कालिक सत्य है । वह कभी पुराना नहीं पड़ता, कभी महत्वहीन नहीं हो सकता। हजारों वर्षों के बाद आज विश्व जिस सर्वनाश की चोटी पर खड़ा है उससे बचाने के लिए महावीर का उपदेश ही एकमात्र मार्ग है युवापीढ़ी अपने आक्रोश को व्यक्त करने के पूर्व उसे समझे । जिन कारणों से उनका

विद्रोह है उन कारणों का विश्लेषण करें और महावीर के जीवन एवं दर्शन से उन समस्याओं का समाधान ढूँढे। यदि युवापीढी इस दिशा में थोड़ा भी प्रयास करेगी तो उनका मानसिक असन्तोष संतोष में बदल जायेगा उनका विद्रोह निर्माण की ओर अग्रसर होगा। हमें आशा करनी चाहिए कि हमारी युवापीढ़ी एक बार केवल महावीर के जीवन दर्शन के साहित्य को पढ़ ही लेगी साहित्य एवं सिद्धान्त को जानना पहली शर्त है। उसके बाद उस पर चिन्तन मनन एवं विचार होना ही चाहिए। युवापीढ़ी बुद्धिमान है, तर्क सम्पन्न है और समझकर उसके पीछे खपने में समर्थ है इसलिए उनके जीवन में महावीर आलोकस्तम्भ सिद्ध होंगे प्रेरक होंगे। ●

सुविचार

भरोसा एक ऐसी चीज है... जिसके टूटने पर कोई आवाज तो नहीं आती... लेकिन उसकी गूँज जीवन भर सुनाई देती है...

दान करने से रूपया जाता है लक्ष्मी नहीं... घड़ी बंद करने से घड़ी बंद होती है समय नहीं... झूठ छुपाने से झूठ छुपता है। सच नहीं...

हम तो जोड़ना जानते हैं... तोड़ना सीखा ही नहीं... खुद टूट जाते हैं अक्सर लेकिन किसी को छोड़ना सीखा ही नहीं....

हर एक लिखी हुई बात को हर एक पढ़ने वाला नहीं समझ सकता... क्योंकि लिखने वाला भावनाएँ लिखता है और लोग केवल शब्द पढ़ते हैं..

कोई भी रिश्ता बड़ी बड़ी बातें करने से नहीं बल्कि छोटी छोटी बातों को समझने से सच्चा और गहरा होता है...

रिश्ते को दौलत की निगाहों से मत देखो क्यूँकि अक्सर साथ निभानेवाला इंसान गरीब ही होता है....

लक्ष्मी की चोरी हो सकती है... लेकिन सरस्वती की नहीं... इसलिए अपनी औलादों को शिक्षित बनाएँ धनवान नहीं....

जो इंसान अच्छे विचार और अच्छे संस्कार को पकड़ लेता है... फिर उसे हाथ में माला पकड़ने की जरूरत नहीं पड़ती...

कोई कितना भी झूठा या कपटी हो आपके साथ... आप तब भी सच्चे बने रहिए क्योंकि किसी बीमार को देखकर स्वयं को बीमार कर लेना... यह समझदारी नहीं मूर्खता है...

आगे दुःख, गलत लोगों से उम्मीद रखने से होते हैं... और बाकी आधे सच्चे लोगों पर शक करने से होते हैं....

अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियाँ जीवन जीने का हिस्सा... पर उन सब में मुस्कुराते रहना जीवन जीने की कला है....

एक सुखद जीवन जीने के लिए, मस्तिष्क में सत्यता.. होंटो पर प्रसन्नता..और हृदय में पवित्रता जरूरी है.. जिसका मन मस्त है उसके पास समस्त है.

नम्रता से बोलना... हर एक का आदर करना... शुक्रिया अदा करना... और माफी माँगना... ये चार गुण जिस व्यक्ति के पास है... वो सबके करीब और सबके लिए खास है...

●

वीरत्थुइ में भगवान महावीर के ६० विशेषण

लेखक – कविरत्न डॉ. दिलीप धींग, चेन्नई. मो. ९४१४४७२७२०
(शोध – प्रमुख जैनविद्या विभाग, शासुन जैन कॉलेज)

द्वितीय अंग आगम 'सूयगडो' या सूत्रकृतांग सूत्र के छठे अध्ययन में पंचम गणधर और प्रथम आचार्य सुधर्मा स्वामी द्वारा चौबीसवें तीर्थंकर महावीर की भावप्रवण स्तुति की गई है। अर्धमागधी प्राकृत भाषा में रचित दो-दो पंक्तियों की २९ गाथाओं की इस स्तुति में श्रमण वर्धमान महावीर को विभिन्न संदर्भों में विभिन्न विशेषणों और उपमाओं से अलंकृत किया गया है। पहली और अंतिम गाथा के अतिरिक्त सभी गाथाओं में भगवान महावीर की एक या एकाधिक उपमाओं या विशेषताओं को काव्य में गूंथा गया है। कहीं एक ही गाथा में अनेक विशेषताएँ हैं तो कुछ विशेषताएँ एक से अधिक गाथाओं में भी अंकित हुई हैं। कुछ विशेषताओं को भिन्न विशेषार्थ और भावार्थ के साथ विभिन्न गाथाओं में अलग-अलग शब्दों में अभिव्यक्त किया गया है। जगत् में जो वस्तुएँ, सिध्दान्त, समूह आदि श्रेष्ठ होते या माने जाते हैं, उनकी उपमा व तुलना के साथ भगवान महावीर और उनके साधनामय जीवन को सुन्दर तरीके से सर्वश्रेष्ठ बताते हुए स्तुति की गई है। इस स्तुति में आए ऐसे ही नामों, विशेषणों, विशेषताओं और उपमाओं का यहाँ ससन्दर्भ परिचय दिया जा रहा है–

१. ज्ञातपुत्र (नातसुत, णायपुत्त) **:** जैन आगमों के अलावा भगवान महावीर के 'ज्ञातपुत्र' नाम का उल्लेख बौध्द ग्रंथों में भी मिलता है। 'नाय' (ज्ञात) एक कुल था। ज्ञातकुल के आधार पर भगवान का एक नाम ज्ञातपुत्र भी है। (गाथा क्रमांक २, २१, २३ एवं २४)

२. खेदज्ञ (खेयण्णए) : संसार और संसार के प्राणियों के दुःखों को जानने वाले (गाथा क्रमांक ३)

३. क्षेत्रज्ञ (खेयण्णए) : लोकालोक के सम्पूर्ण क्षेत्र के ज्ञाता । लोकालोक स्वरूप के ज्ञाता । आत्मा को 'क्षेत्र' भी कहा गया है, इस अर्थ में आत्म-स्वरूप के ज्ञाता। (गाथा क्रमांक ३)

४. कुशल (कुसले) : आत्मविद्या की उपासना करने और करवाने में अत्यन्त निपुण । (गाथा क्रमांक ३)

५. आशुप्रज्ञ (आसुपन्ने): प्रत्युत्पन्नमति । त्वरित और तीव्र प्रज्ञा वाले । सदैव और सर्वत्र उपयोगवान, जागृत, सजग । (गाथा क्रमांक ३, ७ और २५)

६. महर्षि (महेसी) : समस्त ऋषियों में सर्वश्रेष्ठ, महानतम ऋषिवर, परम महर्षि। (गाथा क्रमांक ३, १७ और २६)

७. अनन्तज्ञानी (अनंतणाणी) : सर्वज्ञ। परम आत्मबोध से अनन्त को जानने वाले। जिनके ज्ञान का कोई अन्त और ओर-छोर नहीं है। (गाथा क्रमांक ३)

८. अनन्तदर्शी (अणंतदंसी) : आत्मचक्षु से अनेकान्त से अनन्त को देखने वाले। जिनका दर्शन अनन्त का दर्शन है। (गाथा क्रमांक ३)

९. यशस्वी (जसंसि) : विपुल और विमल यश के धनी। महायशस्वी (गाथा क्रमांक ३)

१०. लोकनाथ : भगवान महावीर जगत् के जन-जन के नयन-पथ में स्थित (चक्खुपहे ठियस्स) अर्थात् सबकी आँखों के तारे, लोकप्रिय, लोकनाथ और लोक-श्रध्दा के अनन्य केन्द्र थे। (गाथा क्रमांक ३)

११. प्रज्ञावान (पण्णे) : उत्कृष्ट प्रज्ञा के धनी । यहाँ केवलज्ञानी के अर्थ में भी 'प्रज्ञावान' कहा गया है । (गाथा क्रमांक ४)

१२. सर्वदर्शी (सव्वदंसी) : सर्व द्रव्य, क्षेत्र,

काल और भाव को सुस्पष्ट देखने वाले। (गाथा क्रमांक ५)

१३. अभिभूत ज्ञानी (अभिभूय णाणी) : चार ज्ञान को पराजित करके केवलज्ञानी बनने वाले । समस्त अज्ञान और मिथ्या ज्ञान को पराजित करने वाले (गाथा क्रमांक ५)

१४. निरामगंधे : निर्दोष चारित्र के अनुपालक, धारक । (गाथा क्रमांक ५)

१५. धृतिमान (धिइं) : असीम अनुपम धैर्य को धारण करने वाले। (गाथा क्रमांक ५)

१६. स्थितात्मा (ठियप्पा) अपने आत्मा में आत्मस्वरूप में स्थित (लीन)। (गाथा क्रमांक ५)

१७. सर्वोत्तम विद्वान (अणुत्तरे सव्वजगंसि विज्ज) : समस्त जगत् में सकल पदार्थों के ज्ञाता । समस्त विद्याओं के स्वामी, पारगामी । आत्मविद्या के महामनीषी । (गाथा क्रमांक ५)

१८. निग्रंथ (गंथातीते) : बाह्य आभ्यंतर समस्त ग्रंथियों (परिग्रहों) से मुक्त और सर्वथा अपरिग्रही । ग्रंथ (पुस्तक) की सीमाओं से परे । जिनकी कालजयी जीवन-साधना और अनंत उपकारों को ग्रंथों में गूंथना या लिपिबध्द करना असंभव हो (गाथा क्रमांक ५)

१९. अभय : सात भयों यानी सभी प्रकार के भयों से रहित । सबको भयमुक्त करने वाले, अभय के साधक और उद्‌बोधक (गाथा क्रमांक ५)

२०. अनायु (अणायु) : चारों गतियों के आयुष्यबंध से रहित। आयु पर विजय पाने वाले । भवबंधन से मुक्त । सिध्दगति को प्राप्त। (गाथा क्रमांक ५ व २९)

२१. भूतिप्रज्ञ (भूईपण्णे): अतिशय प्रवृध्द प्रज्ञा-सम्पन्न । सर्वमंगलमयी प्रज्ञा-सम्पन्न ।विश्वरक्षामयी प्रज्ञा से सम्पन्न । संसार में जीवरक्षा की विमल बुध्दि वाले प्रभूत ज्ञानी । (गाथा क्रमांक ६, १५ और १८)

२२. अनियताचारी (अणिएयचारी) : अप्रतिबध्द विहारी। परम स्वतंत्र (गाथा क्रमांक ६)

२३. ओघंतर (ओहंतरे) : संसार सागर को पार करने और कराने वाले (गाथा क्रमांक ६)

२४. धीर (धीरे) : पाँचवीं गाथा में प्रभु को धृतिमान का विशेषण दिया गया। यहाँ उसके ही पर्यायवाची रूप में उन्हें अखूट धैर्यवान कहा गया। (गाथा क्रमांक ६)

२५. अनन्त – चक्षु (अणंत चक्खू) : अनन्त ज्ञानवान। केवलज्ञान रूपी नेत्रों से अनन्त ज्ञेय पदार्थों को देखने-जानने वाले एक को भी अनन्त दृष्टियों से जानने और देखने वाले । तीसरी गाथा में 'अनन्तदर्शी' शब्द भी इस अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। (गाथा क्रमांक ६ एवं २५)

२६. तेजस्वी सूर्य (अणुत्तरं तप्पइ सूरिए) : अपनी अनुत्तर तप साधना से सूर्य की तरह तपने वाले। जगमगाते ज्ञानसूर्य सर्वाधिक देदीप्यमान। (गाथा क्रमांक ६)

२७. ज्ञान – प्रकाशक : भगवान सूर्य की भाँति अंधकार को प्रकाश में बदल देते थे। अज्ञान विनाशक । अज्ञान अंधकार को नष्ट करने वाले और सर्वत्र ज्ञान का प्रकाश फैलाने वाले। (गाथा क्रमांक ६)

२८. काश्यप (कासव) : काश्यप गोत्रीय होने ने भगवान को काश्यप भी कहा गया है। (गाथा क्रमांक ६)

२९. नेता (णेया) : जैसे हजारों देवताओं में इन्द्र महाप्रभावशाली एवं विशिष्ट नायक हैं, उसी प्रकार भगवान महावीर उत्तम धर्म-शासन को आगे ले जाने वाले, मोक्षमार्ग का नेतृत्व करने वाले महाप्रभावशाली सर्वोत्तम नेता हैं, अनुपम मार्गदर्शक हैं। (गाथा क्रमांक ७)

३०. मुनि और मुनिश्रेष्ठ : मौन रहने वाले, मनन करने वाले महाश्रमण । जैसे लम्बे पर्वतों में निषध पर्वत श्रेष्ठ है तथा वलयाकार पर्वतों में रूचक पर्वत श्रेष्ठ है,

वैसे ही सभी प्रकार के मुनियों में भगवान महावीर सर्वश्रेष्ठ हैं। (गाथा क्रमांक ७, १५ व १९)।

३१. अक्षय सागर : ज्ञान और प्रज्ञा के अखूट सागर (गाथा क्रमांक ८)

३२. महासागर (महोदधि) : जिसका पार न पाया जा सके ऐसे स्वयंभूरमण समुद्र की तरह भगवान महावीर की निर्मल प्रज्ञा के महासागर है (गाथा क्रमांक ८)

३३. इन्द्र के समान दीप्तिमान (देवाहिपती जुतीमं) : देवेन्द्र शक्रेन्द्र के समान द्युतिमान और तेजस्वी (गाथा ८)

३४. महाशक्तिमान (पडिपुण्ण वीरिए) : परिपूर्ण सामर्थ्य और अनन्त आत्मशक्ति से युक्त । (गाथा क्रमांक ९)

३५. सर्व आनन्ददायक (सुरालए मुदागरे) : देवताओं के लिए सुरालय (देवालय) आमोद-प्रमोद से युक्त होता है, वैसे ही भगवान महावीर, उनका दर्शन और उनके दर्शन सबके लिए आनन्दप्रदायक एवं प्रमोदजनक हैं। (गाथा क्रमांक ९)

३६. अनेक गुणों से युक्त (अणेग गुणोववेते) : अनेक, असंख्य और अनंत सद्गुणों और विशेषताओं से युक्त (गाथा क्रमांक ९)

३७. सुमेरू पर्वत के समान : जिस प्रकार सुदर्शन (सुमेरु) पर्वत समस्त पर्वतों में श्रेष्ठ सर्वोच्च, सर्वोत्तम, विराट् रमणीय तथा गहन हैं, उसी प्रकार भगवान महावीर अनेक दुर्लभ विशेषताओं, विशेषणों, नामों और अतिशयों से युक्त हैं। (गाथा क्रमांक ९-१४)

३८. उत्तम धर्म के प्रतिपादक : अहिंसा-प्रधान अनुत्तर, सर्वोत्तम श्रुत-धर्म और चारित्र-धर्म के प्रतिपादक और उपदेशक । (गाथा क्रमांक १६)

३९. अनुपम ध्यान-साधक (अणुत्तरं झाणवरं झियाइं) : भगवान महावीर का ध्यान अत्यन्त शुभ, उज्ज्वल, शंख की तरह धवल और चन्द्रमा की तरह निर्मल था। (गाथा क्रमांक १६)

४०. उत्कृष्ट व अग्रणी (अनुत्तरग्गं): ज्ञान, दर्शन और चारित्र के उत्कृष्ट एवं अग्रणी आराधक । (गाथा क्रमांक १७)

४१. ज्ञान और शील में सर्वोत्तम : जैसे वृक्षों में शाल्मली, वनों में नन्दनवन, ध्वनियों व शब्दों में मेघगर्जन, तारों में चन्द्रमा और सुगंध में चन्दन की सुगंध श्रेष्ठ है, वैसे ही ज्ञान और शील में भगवान महावीर सर्वश्रेष्ठ हैं। (गाथा क्रमांक १८-१९)

४२. अप्रतिज्ञ (अपडिण्ण) इहलोक और परलोक के सुखों की प्रतिज्ञा (निदान) से रहित, पूर्णतः निष्काम, निराकांक्षी । (गाथा क्रमांक १९)

४३. तपस्वियों में सर्वश्रेष्ठ : जैसे समुद्र में स्वयंभूरमण समुद्र, नागकुमार देवों में धरणेन्द्र, रसों में इक्षुरस श्रेष्ठ हैं, वैसे ही तप, उपधान और तपस्वी मुनियों में भगवान महावीर सर्वश्रेष्ठ हैं, सर्वविजेता हैं। (गाथा क्रमांक २०) ।

४४. निर्वाणवादियों में सर्वश्रेष्ठ : जैसे हाथियों में ऐरावत, वन्य पशुओं में सिंह, जलों में गंगा-जल तथा पक्षियों में वेणुदेव गरुड़ मुख्य हैं, वैसे ही निर्वाणवादियों तथा मोक्षमार्ग के प्रणेताओं में भगवान महावीर सर्वश्रेष्ठ और सर्वप्रधान हैं। (गाथा क्रमांक २१)

४५. ऋषियों में सर्वश्रेष्ठ : जैसे योध्दाओं में विश्वसेन चक्रवर्ती, पुष्पों में अरविन्द (कमल), क्षत्रियों में चक्रवर्ती श्रेष्ठ हैं, वैसे ही ऋषियों में वर्धमान महावीर सर्वश्रेष्ठ हैं। (गाथा २२)

४६. लोकोत्तम श्रमण : जैसे दानों में अभयदान, सत्य में निरवद्य वचन, तपों में ब्रह्मचर्य श्रेष्ठ हैं, वैसे ही ज्ञातपुत्र भगवान महावीर स्वामी लोक में सर्वोत्तम श्रमण हैं। (गाथा क्र. २३)

४७. अद्वितीय ज्ञानी : जैसे आयुष्य की दृष्टि से अनुत्तर विमानवासी देव श्रेष्ठ हैं. सुधर्मासभा समस्त सभाओं में श्रेष्ठ है तथा सब धर्मों में निर्वाण (मोक्ष) श्रेष्ठ हैं, उसी प्रकार ज्ञातपुत्र भगवान महावीर से बढ़कर कोई ज्ञानी नहीं है, अर्थात् वे अद्वितीय ज्ञानी हैं। (गाथा क्रमांक २४)

४८. **पृथ्वीसम आधारभूत :** भगवान महावीर पृथ्वी की तरह महान सहिष्णु और सभी प्राणियों के लिए आधारभूत हैं। (गाथा क्रमांक २५)

४९. **समुद्रसम गंभीर :** महासागर की तरह गंभीर रहते हुए भगवान महावीर ने संसार समुद्र पार किया। (गाथा क्रमांक २५)

५०. **परम अनासक्त** (विगय गेही) **:** सभी प्रकार की गृध्दियों (आसक्तियों) से रहित। (गाथा क्रमांक २५)

५१. **पूर्णत: असंग** (ण सण्णिहिं कुव्वइ)**:** भौतिक पदार्थों एवं भावात्मक विकारों की सन्निधि (निकटता) नहीं करने वाले । परम असंग्रही । असंग्रह के उत्कृष्ट प्रतिमान। (गाथा क्रमांक २५)

५२. **अभयंकर :** अभय के साधक तथा दूसरों को अभय प्रदान करने वाले। (गाथा क्रमांक २५)

५३. **वीर :** स्वयं से, अष्टकर्मों से युध्द करने वाले वीर, अतिवीर और महावीर (गाथा क्रमांक २५)

५४. **अर्हन्त :** कषायों और दोषों से सर्वथा मुक्त सर्वपूज्य, विश्ववंद्य तीर्थंकर । जिन्होंने न तो स्वयं पाप किया और न ही किसी से करवाया। सर्वथा निष्पाप (गाथा क्रमांक २६)

५५. **सर्वपापों के निवारक :** भगवान महावीर ने सभी प्रकार के पापों और पापस्थानों का सर्वथा त्याग कर दिया। उन्होंने न तो स्वयं पाप किया, न ही किसी से करवाया और न ही पाप करने का अनुमोदन किया। वे सर्वथा पापमुक्त एवं नितांत निष्पाप थे। (गाथा क्रमांक २६ व २८)

५६. **समस्त वादों के ज्ञाता :** भगवान महावीर क्रियावाद, अक्रियावाद, विनयवाद, ज्ञानवाद आदि समस्त वादों और मतों के मर्मज्ञ थे। वे उन वादों और मतों के प्रत्येक पक्ष को भी सम्यक् रूप से जानते थे। (गाथा क्रमांक २७)

५७. **संयम में सुस्थित :** भगवान महावीर ज्ञान और सजगता के साथ जीवनपर्यंत संयम में उद्यत और स्थित रहे। (गाथा क्रमांक २७)

५८. **इसलोक व परलोक के ज्ञाता :** भगवान महावीर इसलोक, परलोक, उभयलोक एवं इन लोकों के चातुर्गतिक संसार के अशाश्वत सुख-दु:ख को भलीभाँति जानते थे। वे लोकोत्तर पथ के अलौकिक पथिक थे। (गाथा क्रमांक २८)

५९. **पंचव्रतों के प्रतिपादक :** भगवान महावीर ने चातुर्याम व्रत व्यवस्था में ब्रह्मचर्य को स्वतंत्र स्थान दिया- से वारिया इत्थी... / (गाथा क्रमांक २८)

६०. **दिवाभोजन के प्रतिष्ठापक :** भगवान महावीर ने रात्रिभोजन निषेध को श्रमण जीवन में छठे महाव्रत के रूप में प्रतिष्ठित किया। (गाथा क्रमांक २८)

वीरस्तुति एक उत्तम भक्तिकाव्य है। इस प्राचीन स्तुति में आत्मविद्या, धर्म, दर्शन, सिध्दांत और परम्परा का ज्ञान भी गुंफित है। भगवान महावीर की विशेषताओं, विशेषणों, उपमाओं, उपकारों और अवदानों के साथ ही इसमें अनेक मनोहर साहित्यिक छटाओं, सैध्दांतिक व दार्शनिक मान्यताओं एवं नैसर्गिक परिवेश का सुरुचिपूर्ण समावेश हुआ है। इसमें भगवान महावीर के कालजयी व्यक्तित्व का गुणवाचक स्वरूप उजागर हुआ हैं। इस मंगलकारी आत्महितकारी काव्य को लय, भाव और श्रध्दा-भक्ति के साथ गाकर गुनगुनाकर, सुनकर सुनाकर भक्तियोग और भावनायोग की साधना की जा सकती है। सूत्रकृतांग सूत्र (१/१५/५) में कहा गया है-

भावणाजोगसुध्दप्पा, जले णावा व आहिया ।
नवा व तीरसंपत्ता, सव्वदुक्खा तिउट्टति ।।

भावना योग से शुध्द आत्मा की स्थिति जल में नौका के समान है। नाव जैसे ही किनारे पहुँचती है, वह आत्मा समस्त दु:खों से मुक्त हो जाता है। वस्तुत: समस्त ज्ञान, दर्शन और चारित्र का सार यही है कि आत्मा दु:खों से मुक्त बने। भावशुध्दि और दु:ख मुक्ति का एक पुनीत माध्यम है- वीरस्तुति यानी भगवान महावीर की स्तुति । ●

कव्हर तपशील - एप्रिल २०२३

❖ **श्री नयपद्मसागरजी म.सा. – आचार्यपद**

जीतो व जीओ चे प्रेरक श्री गणिवर्य नयपद्मसागरजी म.सा. यांना मुंबईच्या महालक्ष्मी रेसकोर्स येथे भव्य व दिमाखदार सोहळ्यात ११ मार्च २०२३ रोजी आचार्य ही पदवी प्रदान करण्यात आली. या कार्यक्रमांस सर्व संप्रदायचे साधू-साध्वी अनेक राजकीय नेते, सुमारे पन्नास हजार भक्तगण उपस्थित होते. (बातमी पान नं. १५१)

❖ **श्री प्रीतिसुधाजी दीक्षा महोत्सव – क्षेत्रपाल प्रतिष्ठान**

लोणीकंद पुणे येथील श्री क्षेत्रपाल प्रतिष्ठान, नवकार तीर्थ येथे १९ मार्च २०२३ रोजी श्री क्षेत्रपाल प्रतिष्ठानच्या प्रणेता, संस्कार भारती, वाणीभूषण श्री प्रीतिसुधाजी म.सा. यांचा ६१ वा दीक्षा महोत्सव भव्य कार्यक्रमात संपन्न झाला.
(बातमी पान नं. १४९)

❖ **डॉ. संजय रुणवाल – पुस्तक प्रकाशन**

पुणे येथील डॉ. संजय अमृतलालजी रुणवाल द्वारा लिखित 'Demystifying Strategy Implementation A-Roadmap for Putting Strategy to Action' या पस्तकाचे प्रकाशन ५ मार्च २०२३ रोजी डॉ. विनोद शहा, श्री. राजेंद्रजी बांठिया यांच्या हस्ते संपन्न झाला.
(बातमी पान नं. १५३)

❖ **पूना हॉस्पिटल ॲण्ड रिसर्च सेंटर**

पूना हॉस्पिटल ॲण्ड रिसर्च सेंटरच्या ३८ व्या वर्धापन दिनानिमित्त राजस्थानी ॲण्ड गुजराथी चॅरिटेबल फाउंडेशनचे दाते, सभासद व हितचिंतक यांचे स्नेह संमेलन आयोजित करण्यात आले होते.

यावेळी ज्येष्ठ न्यूरॉलॉजिस्ट डॉ. सुधीर कोठारी यांचा सत्कार पूना हॉस्पिटलचे अध्यक्ष श्री. देवीचंदजी जैन, मॅनेजिंग ट्रस्टी श्री. राजकुमारजी चोरडिया व जॉईंट मॅनेजिंग ट्रस्टी श्री. पुरुषोत्तमजी लोहिया यांनी केला. (बातमी पान नं. १३९)

❖ **नामको हॉस्पिटल – धारिवाल कार्डिॲक सेंटर**

नामको चॅरिटेबल ट्रस्ट संचालित नामको हॉस्पिटल मधील श्री. प्रकाशजी रसिकलालजी धारिवाल कार्डिॲक केअर सेंटरचा उद्घाटन सोहळा १८ मार्च २०२३ रोजी केंद्रिय मंत्री नितीनजी गडकरी, श्री. प्रकाशजी धारिवाल यांच्या हस्ते अनेक मान्यवरांच्या उपस्थितीत संपन्न झाला.
(बातमी पान नं. १४०)

❖ **डायग्नोपिन न्यू पनवेल, मुंबई – उद्घाटन**

न्यू पनवेल मुंबई येथे रोटरी क्लब व डायग्नोपिनच्या नवीन शाखाचे उद्घाटन पनवेलचे आमदार श्रीमान प्रशांतजी ठाकूर यांच्या हस्ते व डायग्नोपिनचे संचालक श्री. प्रफुल्लजी कोठारी, श्री. मितेशजी कोठारी आदि मान्यवरांच्या उपस्थितत संपन्न झाले.
(बातमी पान नं. १५२)

❖ **अर्हम् फाउंडेशन, पुणे**

अर्हम् फाउंडेशन, पुणे तर्फे राष्ट्रीय दिव्यांग पुरस्कार पुण्याचे पालकमंत्री श्री. चंद्रकांतजी पाटील, आमदार सुनीलजी कांबळे, सरहद संस्थेचे अध्यक्ष श्री. संजयजी नहार, अर्हम् फाउंडेनशचे अतिशजी चोरडिया, स्वराजजी पगारिया, शैलेशजी पगारिया,

श्रीकांतजी पगारिया आदिंच्या सान्निध्यात संपन्न झाले. (बातमी पान नं. १५२)

❖ **श्री. गौतमजी नाबरिया, पुणे**

पुणे येथील सामाजिक व धार्मिक कार्यात अग्रेसर व गौतमनिधीचे कार्यकर्ता श्री गौतमजी पन्नालालजी नाबरिया यांनी १०० वा रक्तदानाचा टप्पा पूर्ण केला. (बातमी पान नं. १४५)

❖ **डॉ. राजेशजी शिंगवी – अल्पसंख्याक कमिटीवर**

सामाजिक व धार्मिक कार्यात अग्रेसर डॉ. श्री. राजेशजी पोपटलालजी शिंगवी यांची भारत सरकारच्या नॅशनल कमिशन फॉर मायनॉरिटी तर्फे पश्चिम बंगाल स्टेटच्या धार्मिक अल्पसंख्यांक समितीवर जैन धर्माचे प्रतिनिधी म्हणून नेमणूक करण्यात आली आहे. भारत सरकार अल्पसंख्यक आयोगाचे अध्यक्ष श्री. इकबालसिंह लालपुरा सोबत डॉ. राजेशजी शिंगवी.
(बातमी पानं नं. १४५)

❖ **जैन समाज गौरव श्री. रमणलालजी लुंकड**

पुणे येथील प्रसिद्ध बिल्डर्स, धार्मिक, सामाजिक कार्यात अग्रेसर, दानवीर श्री. रमणलालजी लुंकड यांची मुलाखात या अंकात प्रसिद्ध केली आहे. (लेख पान नं. ९१)

❖ **दुगड ग्रुप व निर्जरा फाउंडेशन – रक्तदान**

पुणे : स्व. हिरालाल नारायण दुगड यांच्या स्मरणार्थ निर्जरा फाउंडेशन तर्फे रक्तदान शिबिराच आयोजन पुष्प मंगल कार्यालय बिबवेवाडी येथे १९ मार्च २०२३ रोजी करण्यात आले होते. या शिबीराचे उद्घाटन राज्य महिला आयोगाच्या अध्यक्ष रुपालीजी चाकणकर यांच्या हस्ते करण्यात आले. सोबत श्री. रविंद्रजी दुगड, डॉ. विजयजी शेठिया व निर्जरा फाउंडेशनच्या सौ. शोभा दुगड, सौ. लतिका सांकला इत्यादी. (बातमी पान नं. १३९)

❖ **ऋतुराज गौतमनिधी लेडिज ग्रुप, पुणे**

पुणे येथील ऋतुराज सोसायटी परिसरातील महिलांचा ऋतुराज गौतम निधी लेडीज ग्रुप नुकतेच स्थापन करण्यात आले व या ग्रुपचा पहिला कार्यक्रम ''मन स्वस्थ तो तन भी स्वस्थ'' या विषयावर डॉ. पल्लवी कसांडे यांचे व्याख्यान १६ मार्च २०२३ रोजी आयोजित केले होते. डॉ. कसांडे सोबत कार्यकारणी सदस्य सोबत नाबरिया परिवार. (बातमी पानं नं. १४५) ●

श्री. प्रितमजी मंडलेचा – पुरस्कार

पुणे येथील श्री. प्रितमजी राजेंद्रजी मंडलेचा यांना १४ व्या रियालिटी, कॉनक्लेव्ह आणि एक्सलेन्स अवॉर्ड २०२३ मध्ये दोन पुरस्कार मिळाले. उत्कृष्ट पूर्णविकास प्रकल्प व रियल इस्टेट सेक्टरमध्ये उत्कृष्ट योगदानासाठी यंग अचिव्हर ऑफ द इयर या पुरस्काराने ३ मार्च २०२३ रोजी पुणे येथे सन्मानित करण्यात आले. अभिनंदन ! ●

जयती जैनम साधना तीर्थ, भिवरी साधु–साध्वी स्थिरावास व्यवस्था

जैन धर्म के सभी पंथ के साध्वीजी (स्थानकवासी, मंदिरमार्गी, दिगंबर, तेरापंथी) जो वार्ध्यक्य एवं अस्वास्थ्य के कारण विहार करने में अक्षम है उनके स्थिर–वास की व्यवस्था पुणे–सासवड रोड (खडी मशिन, कोंढवा से १३ किमी दूर) भिवरी, ता. पुरंदर स्थित ''जयती जैनम साधना तीर्थ'' इस संस्था में हो सकती है ।

अक्षर आपके पास ऐसे साध्वीजी की जानकारी हो तो कृपया हमसे संपर्क करें ।

अध्यक्ष,
जयती जैनम साधना तीर्थ, भिवरी,
ता. पुरंदर, जिला पूना.
मो. ९४२२००४६७१, ९६५७०१८८८२